

4

संत गरीबदास कृत 'रत्न सागर' का वस्तु-विन्यास एवं शिल्प-विधान

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
की
पी-एच०डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु
प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की संक्षेपिका



निर्देशक

निर्देशक

7-11-05

डॉ० सन्त राम वैश्य
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

अध्यापक

[Signature]

08-11-05

कुसुम शर्मा
शोधकर्त्री
कुसुम शर्मा

हिन्दी विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ष 2005

संत गरीबदास कृत 'रत्न सागर' का वस्तु-विन्यास एवं शिल्प-विधान

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
की
पी-एच०डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु
प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की संक्षेपिका



निर्देशक
7-11-05

डॉ० सन्त राम वैश्य
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

कुसुम शर्मा
शोधकर्त्री
कुसुम शर्मा

अनुमोदित
मन्त्री
08-11-05

हिन्दी विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ष 2005

संक्षेपिका

संत गरीबदास जी के कृतित्व पर इस शोध-ग्रंथ में संत परम्परा के साक्ष्य के आलोक में विस्तार सहित प्रकाश डाला गया है। संत मत के तीन उपास्य देव हैं — सत्पुरुष, सद्गुरु और संत। गरीब दास जी ने "साहिब से सद्गुरु भये, सद्गुरु से भये साध" कहकर साधक के तीन स्तरों को स्पष्ट किया है। गुरु कृपा, अद्वैत दृष्टि, माधुर्य भाव तथा योग के विविध रूपों का व्याख्यान 'रत्न सागर' के माध्यम से किया गया है। 'रत्न सागर' पर आधारित इस शोध-ग्रंथ में गरीबदास का जीवन परिचय प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत किया गया है। इसका आधार गरीबदास जी के पुत्र जैतराम की वाणी को बनाया गया है। नानक और कबीर का उल्लेख संत मत के व्यवस्थापक आचार्य कवियों के रूप में ही गरीब दास जी ने किया है। कबीर को वे 'साहिब' मानते हैं तथा भक्त कबीर को साहिब की बंदगी करने वाला संत। शुक सम्प्रदाय के समान वह कृष्ण भक्ति और योग तथा रामावत सम्प्रदाय के समान दास्य भाव और योग का उन्होंने समन्वय किया। उनकी भक्ति पद्धति पुराण परम्परा की है। गरीब दास जी की वाणी का लक्ष्य आध्यात्म वर्णन रहा है अतः ईश्वर भक्ति की ओर मानव को उन्मुख करना ही उनका ध्येय है। अभिव्यक्ति सौष्ठव की दृष्टि से भावात्मक पक्षों का जैसा हृदयग्राही वर्णन इन्होंने किया है उतना अन्यत्र नहीं मिलता।

प्रस्तुत शोध ग्रंथ में सर्वप्रथम उत्तर भारत की संत परम्परा में गरीब दास जी का स्थान निर्धारित किया गया है। संत शब्द का अर्थ क्या है, सबसे पहले इसकी व्याख्या की गयी है। गरीब दास जी से पूर्व या समकालीन जो संत हुए हैं उनका संक्षिप्त परिचय दिया गया है। कबीरदास, दादूदयाल, गुरुनानक, रविदास, सुन्दरदास, मलूकदास तथा नामदेव आदि संतों का परिचय प्रस्तुत किया है। ये सभी संत उत्तर भारत के

निर्गुण पंथ के भक्त कवि हैं। इन सबने संत परम्परा को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन संतों के अतिरिक्त हरियाणा के संतों का परिचय देना भी आवश्यक है। हरियाणा को 'भारत का हृदय' कहा गया है। हरियाणवी संत साहित्य की परम्परा सम्पूर्ण भारत की परम्परा का ही एक अभिन्न अंग है। हरियाणा के संत सम्प्रदायों में साध सम्प्रदाय, गरीब पंथ, नितानन्दी पंथ, घीसा पंथ, राधास्वामी पंथ, बेनामी पंथ, परमानन्दी पंथ, कबीर पंथ, समता पंथ, गौण पंथ, नांगी पंथ, डेरा सच्चा सौदा, गुलाब दासी सम्प्रदाय आदि पंथ प्रमुख हैं। उत्तर भारत की संत परम्परा में संत गरीबदास सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इस शोध प्रबन्ध में गरीबदास जी के जीवन के विषय में प्रामाणिक जानकारी दी गयी है। गरीबदास जी के जीवन चरित्र का परिचय देने के पश्चात् उनके प्रमुख डेरों का विवरण दिया गया है। उनके प्रमुख डेरे हरियाणा, पंजाब, उत्तरांचल, दिल्ली, राजस्थान तथा गुजरात में हैं। गरीबदास जी के छुड़ानी स्थित प्रमुख डेरे 'छतरी साहिब' में आज भी उनके वस्त्र, लोटा तथा पगड़ी रखी हुई है। उनके शिष्यों का परिचय दिया गया है। इसके बाद उनकी वाणी विषयक जानकारी दी गयी है। गरीबदास जी की वाणी एक ग्रंथ के रूप में उपलब्ध है। इस ग्रंथ का उतना ही महत्त्व है जितना सिक्खों के गुरु ग्रंथ साहिब का है। उसी ग्रंथ साहिब का सार रूप रत्न सागर है। गरीबदास जी उत्तर भारत के संत सम्प्रदाय में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। संत काव्य परम्परा में उनका स्थान अद्वितीय है।

'रत्न सागर' में गरीबदास जी की वाणियों का संग्रह है। इसमें ग्रंथ साहिब का सार नवनीत रूप में आ गया है। गरीबदासी लोग नित्य पाठ के लिए इसका प्रयोग करते हैं। 'रत्न सागर' में गुरु महिमा, कुसंगति का अंग, संगति का अंग, संत महिमा, लै का अंग, संगति, सांच का अंग, विचार का अंक, काफिर बोध, मांस मदिरा निषेध, पाखण्ड—खण्डन, अर्जनामा, भक्त की महिमा, दास भाव महिमा आदि अनेक शीर्षकों के अन्तर्गत पदों की रचना की गयी है। गरीबदास जी के अनुसार किसी भी कार्य को सीखने के लिए गुरु की आवश्यकता होती है। गुरु की महिमा अनन्त है। वे पारस के

समान है जो जीव को लोहे से सोना बनाते हैं। वे जीव को सत्य के मार्ग पर चलाते हैं। सतगुरु इस संसार रूपी सागर में नाविक के समान जीव को पार ले जाते हैं। वे सतगुरु तथा साहिब को एक मानते हैं। गरीब दास जी ने ईश्वर के विभिन्न रूपों का भी वर्णन किया है। वे ईश्वर को सर्वव्यापी मानते हैं। उनके अनुसार ईश्वर हमारे माता-पिता सब कुछ हैं। वे ईश्वर के सगुण व निर्गुण दोनों रूपों को मानते हैं। परन्तु वे निर्गुण ब्रह्म को श्रेष्ठ मानते हैं। उन्होंने सत्संगति पर विशेष बल दिया है। उनके अनुसार बुरी संगति में पड़ कर मानव सदा कष्ट पाता है। यह मानव की काया संसार में भ्रमित होकर ईश्वर को नहीं पहचानती। वे साधु की संगति और भगवान की भक्ति को आवश्यक मानते हैं। गरीब दास जी ने माया के रूपों का चित्रण 'रत्न सागर' में किया है। जीव संसार में माया के भ्रम में पड़ कर भटक रहा है। माया जीव को अपने जाल में फंसा कर नचाती है। गरीबदास जी मानव को सावधान रहने को कहते हैं। गरीबदास जी पाखण्ड का खण्डन करते हुए मूर्ति पूजा, माँस मदिरा सेवन का खण्डन करते हैं। वे हिन्दू तथा मुसलमान दोनों को एक समान फटकारते हैं तथा बाह्याडम्बरो से दूर रहने को कहते हैं। वे तीर्थ व्रत आदि को व्यर्थ बताते हैं। 'रत्न सागर' में गरीब दास जी ने संतों की महिमा का बखान किया है। संतों की महिमा का कोई पार नहीं। संतों का ध्यान भगवान स्वयं रखते हैं। वह प्रभु संतों के पीछे-पीछे घूमते हैं। संतों के चरणों में अडसठ तीर्थ पाए जाते हैं। संत ही हैं जो ब्रह्म से हमारा साक्षात्कार करवाते हैं। भगवान की प्राप्ति ही मानव जीवन का प्रमुख लक्ष्य है। जो भगवान का भक्त होता है वह उसे क्षण भर के लिए भी नहीं भूलता। 'भक्त-महिमा' के अन्तर्गत गरीबदास जी कहते हैं कि भगवान भक्तों के अधीन हैं। 'रत्न सागर' में योग के स्वरूप पर गरीबदास जी ने प्रकाश डाला है। उनके अनुसार जीवत्व भाव का विलोप करके ब्रह्म भाव में स्थित हो जाना ही योग है। इसी से जीवात्मा और परमात्मा मिलकर एक हो जाते हैं। योग साधना से योगी की आत्मा ब्रह्म साक्षात्कार से सम्पन्न होकर अक्षय आनन्द को प्राप्त करती है।

गरीबदास जी भक्ति को भवसागर से पार जाने का साधन मानते हैं। वे भक्ति के लिए मन की एकाग्रता को आवश्यक मानते हैं। भगवान की भक्ति में श्रद्धा एवं विश्वास प्रमुख हैं। भक्ति के द्वारा प्रभु मिलन का सुअवसर इस मानव देह में रह कर ही हो सकता है। प्रभु का नाम सुमिरन करने से भक्ति अधिक सुगमता से हो सकती है। गरीबदास जी ब्रह्म की भक्ति में निर्गुण तथा सगुण उपासना दोनों पर बल देते हैं। वास्तव में निर्गुण व सगुण में कोई भेद नहीं है। जब उस ब्रह्म को भक्ति उत्पन्न करनी हो तो वही निर्गुण ब्रह्म सगुण रूप धारण कर लिया करता है। भक्तों का उद्धार करने के लिए निर्गुण ब्रह्म ही सगुण रूप में अवतार लेता है। गरीबदास जी उस ब्रह्म को निराकार मानते हुए भी सगुण गुणों से सम्पृक्त मानने लगते हैं। माधुर्य भाव की भक्ति के अन्तर्गत गरीबदास जी दास्य एवं शृंगार भाव की उपासना करते हैं। वे ब्रह्म को वर तथा जीवात्मा को वधू मानते हैं। 'रत्न सागर' में माधुर्य भाव की सुन्दर व्यंजना हुई है। मिलन के साथ विरह का भी जीवंत चित्रण हुआ है। शांत, दास्य, सख्य आदि भावों की उपासना के साथ गरीब दास जी ने माधुर्योपासना पर विशेष बल दिया। गरीबदास जी के काव्य पर वेदों का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। वेदों के अनुसार ही वे ब्रह्म को अव्यक्त तथा सर्वव्यापी मानते हैं। वह सबके हृदय में वास करता है। इसी प्रकार ईश्वर को भी घट-घट में वास करने वाला, सोलह कलाओं से युक्त बताया है। वे वेदों तथा पुराणों की भांति ब्रह्म तथा ईश्वर को इस ब्रह्माण्ड की महान शक्ति मानते हैं। गरीब दास जी ने 'रत्न सागर' में पंचदेवों के विषय में बहुत से पदों की रचना की है। उन्होंने गणेश, शिव, विष्णु, सूर्य तथा मां शक्ति की स्तुति की है। इनके अतिरिक्त ब्रह्मा, कृष्ण, राम सहित अनेक देवों की उपासना भी की है। मूल रूप से तो गरीबदास जी निर्गुण ब्रह्म के उपासक हैं परन्तु कभी-कभी उनकी यह निर्गुण भक्ति सगुण रूप धारण कर लेती है।

संत मत की साधना में सुरत योग प्रभु-प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन है। गरीबदास जी ने सुरत शब्द योग को प्रभु प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन बताया है। यह आदि नाद ही

सृष्टि की उत्पत्ति का कारण है। इसी निर्गुण शब्द को उन्होंने ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा वेदों का प्राण ओंकार कहा है। गरीब दास जी ने नादानुसंधान को राजयोग की साधना के लिए आवश्यक माना है। उनके अनुसार नादयोग ब्रह्म प्राप्ति में सहायक होता है। गरीबदास जी ने हठ योग को दिव्य ज्ञान प्रदर्शित करने वाला योग बताया है। इस योग में कृण्डलिनी शक्ति को जगाया जाता है। 'रत्न सागर' में उन्होंने हठयोग को ब्रह्म प्राप्ति में सहायक बताया है। अनेक प्रकार की मुद्राओं का भी वर्णन 'रत्न सागर' में किया गया है। प्राणायाम आदि द्वारा भी ब्रह्म की साधना की गयी है। गरीबदास जी के अनुसार यह मानव कर्मों के बंधन में बंध कर ईश्वर को भूल जाता है। प्रभु का नाम ही प्राणी के सब कर्म नष्ट कर देता है। सतगुरु की सहायता से ही सब बंधन कट जाते हैं। कर्मयोग को गरीब दास जी आत्म साक्षात्कार के लिए आवश्यक मानते हैं। कर्मयोग में कर्म ही वह कार्यकारी उपादान है जिस पर इस योग का भवन निर्मित होता है। कर्मयोग कर्म करने की ऐसी युक्ति प्रतिपादित करता है जिससे शरीर भी चलता रहे तथा कर्मों का बंधन भी न रहे। 'रत्न सागर' में कर्मों को बंधन मानते हुए उसे ब्रह्म साक्षात्कार में रुकावट माना गया है। गरीबदास जी ज्ञान योग को एक कठिन योग मानते हैं। इस साधना में साधक सांसारिक वस्तुओं को मिथ्या मानते हैं। ज्ञान, विवेक आदि को भुला कर केवल ईश्वर का भजन करते रहना चाहिए। एक ब्रह्म सत्य है शेष सब मिथ्या है। योग की साधनाओं में ज्ञान योग को उच्च कोटि की साधना माना गया है। गरीब दास जी के अनुसार प्रेमाभिव्यक्ति, ध्यान योग, सुरति योग, ज्ञान योग, हठयोग सब आवश्यक हैं। उन्होंने भक्ति को विशेष बल प्रदान किया। श्रद्धा भक्ति से भगवान का श्रवण कीर्तन आदि करने वाला योगी ही श्रेष्ठ भक्त माना जाता है।

शोध ग्रन्थ के अंत में 'रत्न सागर' के शिल्प विधान के विषय में जानकारी दी गयी है। सबसे पहले शिल्प का अर्थ बताया गया है। शिल्प विधान के अन्तर्गत बिम्ब योजना, प्रतीक योजना, अलंकार विधान, भाषा शैली तथा छन्द योजना पर प्रकाश डाला गया है।

गरीब दास जी ने 'रत्न सागर' में सुन्दर बिम्बों का चित्रण किया है। ब्रह्म को बाज़ीगर तथा जीवों को सर्प के बिम्ब के माध्यम से गरीबदास जी ने सुन्दर चित्रण किया है, उनके अनुसार बाज़ीगर जिस प्रकार सर्प को जैसे चाहे नचाता है वैसे ही ब्रह्म भी जीवों को नचाता है। गरीबदास जी ने 'रत्न सागर' में लौकिक जीवन के स्वाभाविक बिम्बों के माध्यम से परमात्मा, मन, जगत, जीव जैसे अमूर्त भावों को मूर्त रूप दिया है। बिम्बों के समान ही इन्होंने प्रतीक भी जीवन से ही ग्रहण किए हैं। इनके काव्य में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के प्रतीकों से इनके भ्रमणशील व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। कहीं-कहीं इन्होंने प्रतीकों को गहन उलटवासियों के रूप में प्रयोग किया है। गरीब दास जी को अलंकारों के प्रयोग में उत्तम सफलता मिली है। इन्होंने सुन्दर तथा स्वाभाविक अलंकारों का प्रयोग किया है। अनुप्रास, रूपक, दृष्टांत, उदाहरण, मानवीकरण आदि अलंकारों के माध्यम से निर्गुण ब्रह्म, नश्वर जीवन, जीवात्मा, विरह, भक्ति, तृष्णा, माया आदि अमूर्त भावों को मूर्त रूप प्रदान किया है। इन्होंने सामान्य जीवन से ही उपमान लेकर अशिक्षित जनता को गूढ़ आध्यात्मिक रहस्यों से अवगत कराया।

गरीब दास जी ने अपने काव्य में प्रयुक्त आध्यात्मिक संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए विभिन्न प्रकार की शब्दावली का प्रयोग किया है। उन्होंने दार्शनिक शब्दावली योगमूलक शब्दावली, भक्तिपरक, धार्मिक, नीतिपरक, मनोवैज्ञानिक, सम्बन्ध सूचक, मनोरंजनात्मक, राजनीतिक, आर्थिक, कृषि से सम्बन्धित, जाति परक, आयुर्वेदिक व्यवसायिक, संस्कार मूलक, तत्सम, तद्भव, विदेशी आदि शब्दावली का प्रयोग किया है। गरीबदास जी ने अपने काव्य में अनेक भाषाओं का प्रयोग किया है। लोकभाषा में लिखा गया इनका काव्य समूचे प्रदेश में जनमानस का प्रतिनिधित्व करता है।

'रत्न सागर' में छन्द योजना के अन्तर्गत गरीबदास जी ने विभिन्न प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है। स्वर, यति, दोहा, सोरठा, चौपाई, सवैया, कवित्त, अरिल्ल, रमैनी, रेखता, झूलना, बैत आदि विभिन्न प्रकार के छन्दों के प्रयोग में गरीबदास जी को विशेष सफलता मिली है। इन छन्दों के माध्यम से गरीब दास जी ने अपनी गूढ़ और

रहस्यात्मक अनुभूतियों को सहज व सरल रूप में प्रस्तुत किया है। इसी के माध्यम से उन्होंने अशिक्षित ग्रामीण समाज को गूढ़ से गूढ़ विषयों से परिचित कराने का प्रयास किया।

सारांश रूप में हम कह सकते हैं कि गरीबदास जी संत काव्य परम्परा में समूचे हरियाणा प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी वाणी का संग्रह 'रत्न सागर' संत साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 'रत्न सागर' के वस्तु विन्यास और शिल्प विधान पर पूर्ण रूप से प्रकाश डालने का प्रयास प्रस्तुत शोध ग्रंथ में किया गया है। आशा है कि यह शोध ग्रंथ अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल होगा।

Always at Your Service ☎ 01334-245150

JUGAL

BOOK BINDING

Expert in Thesis & Book Binding

ANAND NIWAS, SINGHDWAR,
BY PASS ROAD, HARIDWAR (U.A.)

